

प्रश्न-पेपर २२

मार्क्स १००

'प्राकृत विज्ञान पाठमाला' पाठ १ थी २०

प्र. १ नीचेना प्रश्नोना जवाब लरवो (गमे ते ५)

मार्क्स ७

- (१) संस्कृत अने प्राकृत भाषाणा व्यंजनमां आवतां तफावत स्मजावो ।  
 (२) शब्दानी अंदर ह्य, न्म, झ, र्थ अने स्न आ संयुक्ताक्षरनी शुं फेरफार थाय ते सट्टांत जणावो  
 (३) कमावुं, ताळे थुं, लइ जवुं, जाणवुं आ धातुमोना कर्माणीमां जे आदेश थाय ते लरवो ।  
 (४) स्ना धातुना मात्र ६ अंग जणावो तथा छति, उप उपसर्गना अर्थ जणावी, प्राकृतमां शुं थाय ते जणावो ।  
 (५) द्वित्व क्यां न थाय ते सट्टांत जणावी द्वित्वमां थता फेरफार जणावो ।  
 (६) शब्दमां ल्स्, इ लुं शुं थाय ते जणावी छटनी ट्ट क्यां न थाय ते जणावो ।

प्र. २ (अ) नीचेना धातुना माग्या प्रमाणे रूपो आपो । (गमे ते ५)

मार्क्स ८

- (१) ष्वैज्ज-वर्तः २पुः ए.व. । (२) वेच्छ - भविष्यकाल उपु. व.व.  
 (३) चोप्पड - आहार्य २पुः ए.व. । (४) गट् - क्रियातिपत्यर्थ स्त्री लिंग अंग  
 (५) गा - धातु भूतकाल उपु. ए.व. ।

(ब) नीचेना धातुना कर्माणी रूपो जणावो (गमे ते २)

मार्क्स ६

- (१) वुच्च - आहार्य १पुः ए.व. । (२) लीणज्ज-वर्तः उपु. ए.व. । (३) रवण - भविः उपु. ए.व.

प्र. ३ (अ) नीचेना शब्दोना माग्या प्रमाणे रूपो लरवो (गमे ते ३)

मार्क्स ७

- (१) सिचुंजी - ६-७-८ विभक्ति (२) विज्जात्थी - ३-७-८ विभक्ति  
 (३) महु ५-५-८ " (४) माड - १-२-५ "

(ब) नीचेना सर्वनामोना माग्या प्रमाणे रूपो लरवो (गमे ते ३)

मार्क्स ७

- (१) एतद् - स्त्री १-२ विभक्ति (२) किम् - स्त्री ३-५ विभक्ति  
 (३) इदम् - पुं ६-७ " (४) यद् - नपुं ३-५ "

प्र. ४ नीचेना शब्दोनी नियमानुसार सिद्धी करो (गमे ते ५)

मार्क्स १२

- (१) स्तोत्रम् (२) जुगुप्सति (३) उन्तः पातः  
 (४) निष्क्षिप्तः (५) वप्रम् (६) वनस्पति

प्र. ५ (अ) नीचेना अर्थ मटे संस्कृत + प्राकृत धातुयो जणावो (गमे ते ५)

मार्क्स ५

- (१) लनाववुं (स्व सिवाय) (२) छिनवी लेखुं (३) शिक्षा करवी (शिक्ष सिवाय दण्ड)  
 (४) भ्रमवुं (भ्रम सिवाय) (५) गरज सरववी (६) वेचवुं

(ब) नीचेना अर्थ मटे संस्कृत - प्राकृत शब्दो लिंग साथे आपो (गमे ते ५)

मार्क्स ५

- (१) भीषण (३) दीप्ति (५) निमित्त (७) थप्पड  
 (२) जगत (४) व्रहा (६) पश्चात्ताप (आबन्ने मौ अव्यय)

प्र. ६ नीचेना माग्या प्रमाणे कृदन्तो लरवो (गमे ते ३)

मार्क्स ७

- (१) पर्यस् धातुना विध्यर्थ कृदन्त (२) उद् + इ धातुना वर्तमान कृदन्त

- (3) कृत्वा संहृत्य तु संः श्रुः कृदन्त, नष्टः, क्षिप्तम्, त्रस्तम् तुं भूः कृदन्त लखौ।
- (4) शा, वि + आ + ए - वर्तमान कर्मणी कृदन्त
- 9.7 (अ) नीचेना वाक्योनुं संस्कृत तथा गुजराती करौ (गमे ते 3) मार्स 12
- (9) वंदितु गाथा 36 सम्मदिष्टी
- (8) आजितशांति गाथा 40 जइ इच्छह
- (3) एअस्स मज्झयोरै
- (4) अरहंसर छैक्की गाथा
- (ख) नीचेना गुजराती वाक्योनुं मात्र भाकृत करौ (गमे ते 3) मार्स 90
- (9) मौक्षने इच्छनार श्री श्लोठीक महाराजाए उभु पासै जइने संयम गृहण कर्यु होत  
ते अवा उकारना नरक ना दुरवौ न अनुभव्या होत।
- (2) शत्रुओ वडे जीतानारा स्थानौ युद्ध करता आ देशना राजाना हता।
- (3) भावकी वडे देखाती अतिमाओ सम्यक्त्वनी शुद्धिना श्लेठ कारण समान थरो।
- (4) मरण समये मुकवा योग्य जइ पदार्थोने मुकीने तथा लइ जवा योग्य संस्कारोने  
मात्र लइ जाय छै।